कोंकणी साहित्य

डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा साहित्य, कला और संस्कृति की भूमि है। यहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक आते हैं। उनके मन में गोवा की मौज–मस्ती की छवि अंकित रहती है जोकि यहाँ आने के बाद बदल जाती है। गोवा की अपनी एक सांस्कृतिक विरासत है जो पुर्तगीज शासन द्वारा लगभग चार सौ वर्षों तक शासन करने के बाद भी नहीं बदली है। सांप्रदायिक सद्भाव और भाई–चारे की अद्भुत मिसाल कायम करते हुए गोवा साहित्य सर्जन की दिशा में निरंतर अग्रसर है। भारतीय साहित्य की भांति कोंकणी साहित्य में भी विभिन्न विधाओं में लेखन का कार्य संपन्न हो रहा है।

काव्य

साहित्य की विभिन्न विधाओं में काव्य–लेखन की अपनी प्राचीन परंपरा रही है। गोवा में कई स्वनामधन्य कवि हुए हैं। यहाँ मैं विशेष रूप से 2009 में प्रकाशित कतिपय कवियों की रचनाओं और उनकी काव्य प्रवृत्तियों की चर्चा करूँगा।

काशिनाथ शांबा लोलयेंकार के *काव्यसूत्र* नामक काव्यसंग्रह में उनके जीवनानुभवों के विभिन्न सूत्र पिरोए हुए हैं जिसमें संस्कृति, परंपरा और आधुनिकता के भाव भरे हुए हैं। इस संग्रह के अतिरिक्त इसके पूर्व भी काशिनाथ के 'काशि म्हंटा', 'काशिक म्हणचेंच पड्टा' और 'काशिन म्हणपाचें

सोडुंक ना' काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। रमेश लाड ने मूलतः अध्यापकीय जीवन जीते हुए काव्य सर्जना की है। इस वर्ष इनका *कवनकांठ* नामक काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की कविताएँ मूलतः जीवन के विभिन्न प्रसंगों से जुड़ी हैं। कोंकणी साहित्य के जनक शणै गोंयबाब को वंदन करते हुए कवि लिखता है– *आमच्या शणै गोंयबाबा/तुका नमस्कार, तुका नमस्कार/कर्तुपी तूं पूत मोठो/खरो गोंयकार, खरो गोंयकार।*

परेश नरेंद्र कामत के *शुभंकर* काव्यसंग्रह की कविताएं *प्रिये, अजुनूय, चंद्र, तू, दोन चित्रा, गर्भगाबणी सांज, गांव, शिलांग* आदि शीर्षकों पर आधारित हैं। महेश गोविंद गांवकार, लेविन रोड्रिगिस, थांमस डिसौझा एवं रोजविन ज्योवितो रोड्रीगीस के क्रमशः *फूल पाकळयो, सपनातले काजुले, वेंचिल्लीं फुलां* और *किर्णां* नामक काव्यसंग्रह इस वर्ष प्रकाशित हुए।

कोंकणी काव्यलेखन में इस वर्ष महिलाओं का विशेष योगदान रहा है। गोवा में विभिन्न व्यवसायों में संलग्न ये महिलाएं काव्य लेखन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रही हैं। ग्वादालूप डायस के 'भूंयफोड' (2006) और 'मळबगंगा' (2007) काव्यसंग्रहों को क्रमशः 'गोवा कोंकणी अकादमी साहित्य' और 'कोंकणी भाषा मंडल साहित्य' पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष इनका *जलस्थल* काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ है। इसी क्रम में सुशीला निळकंठ हळर्णकर का *पर्णकुटी* काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें उनकी आत्म–स्पंदन, मन–स्पंदन और भाव–स्पंदन की कविताएँ संग्रहीत हैं। सरस्वती दामोदर नायक के *मुक्तरंग* में कवयित्री के जीवनानुभव के विविध रंग मौजूद हैं। इसी प्रकार शोभा शिवा फुलकार, सौ. शीतल रुपेश भंडारी, दीक्षा दशरथ कांबळी और संहिता कुलकर्णी के क्रमशः *शुभत्कार, सपनांतलीं फुलां, जीण, बिंब पडबिंब* नामक काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए। गोवा काजू के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। संहिता कुलकर्णी ने *काजुले* कविता में काजू फल का एक सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है – *चान्ने पिल्ले काजुले/काळखे राती/नखेत्रांची रोशणाय करतात/रूखार!/आनी/रूखाचेच मळब जाता!*

उपन्यास

आज की लोकप्रिय विधा उपन्यास साहित्य में इस वर्ष कोंकणी में

कई उपन्यास प्रकाशित हुए। गोवा के साहित्य अकादमी के पुरस्कार से पुरस्कृत सुप्रसिद्ध कोंकणी कथाकार दामोदर मावजो का *सुनामी सायमन* उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में सायमन के जीवन संघर्ष को दिखाया गया है। दरअसल सायमन गोवा निवासी मछुआरे का बेटा है। वह बचपन में अपनी बुआ के साथ तमिलनाडु जाता है और उसी समय वहाँ सुनामी आता है। सायमन नारियल के पेड़ पर कुछ समय के लिए अपना जीवन व्यतीत करता है। उसकी बुआ उसे इधर–उधर खोजती फिरती है। वहाँ बहुत सारे टेंट लगे हुए हैं। सुनामी से पीड़ित जनता की सेवा के लिए डॉक्टरों की टोली एक टेंट से दूसरे टेंट की तरफ भाग रही है। लोगों को खाद्य–सामग्री पहुँचाने में सरकार एवं अन्य स्वयं सेवी संस्थाएं लगी हुई हैं। सायमन के बाल मस्तिष्क पर यह सारा दृश्य घूमता है। सुनामी के बाद उसके जीवन का संघर्ष शुरू होता है। उपन्यासकार ने सायमन के जीवन की सुनामी को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है।

इस वर्ष कोंकणी के ख्यातनाम कथाकार महाबळेश्वर का चौथा उपन्यास *हावठण* (आवां) प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व 'काली गंगा', 'युग सांवार', 'खोळ–खोळ', 'मुळां' और दो लघु उपन्यास भी आ चुके हैं। *हावठण* उपन्यास मूलतः कुम्हार जाति की जीवन गाथा पर आधारित है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों और बाजारवाद के दौर में प्लास्टिक के नाना प्रकार के बनने वाले बर्तनों के कारण कुम्हार जाति के समक्ष जीवनयापन की समस्या खड़ी हो गई है। समाज की ये जातियाँ मूलतः अपने परंपरागत व्यवसाय से ही गुजर–बसर करती आ रही थीं, लेकिन अब उनके समक्ष एक नया संकट खड़ा हो गया है। अब तो उन्हें सरकार द्वारा चलाई जा रही नई–नई योजनाओं के कारण बर्तन बनाने के लिए तालाब की मिट्टी तक नहीं मिल रही है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने वर्तमान संदर्भ में कुम्हार जाति के जीवन में आने वाली समस्याओं का चित्रण किया है।

नं. ध. बोरकार का पहला उपन्यास 'पोको' खिस्ती खिस्तींनी' के जीवन–दर्शन पर एवं दूसरा उपन्यास 'समर्पण' ग्रामीण एवं भाटकार के बीच संवाद पर आधारित है। इसी क्रम में इनका तीसरा उपन्यास *गोंदू* 2009 में प्रकाशित हुआ, जिसमें एक बदनसीब ग्रामीण परिवार की कथा है।

इसी परिवार का गोंदू नामक लड़का बहुत होशियार है जोकि फुटबाल का होनहार खिलाड़ी है। इसके अतिरिक्त गोंदू घर–परिवार चलाने के लिए अन्य कार्य करता है। उपन्यास की संपूर्ण कथा गोंदू के जीवन–संघर्ष के इर्द–गिर्द घूमती है।

इसी वर्ष सुजाता सिंगबाल का *आत्मभान* नामक उपन्यास आया। इस उपन्यास में लेखिका ने जीवन को एक यात्रा के रूप में प्रस्तुत करते हुए अपने जीवन के अनुभवों और मनोभावों को बड़ी मार्मिकता से व्यक्त किया है। अनिल परुळेकर का काल्पनिक जीवन पर आधारित *दोन पिळग्यांची काणी* नामक लगभग 150 पृष्ठों वाला उपन्यास प्रकाशित हुआ। एदुवार्द जुझे ब्रुनो द सौजा का *किस्तावं घराबो* नामक उपन्यास कोंकणी देवनागरी और रोमन लिपि दोनों में प्रकाशित हुआ।

भारतीय भाषा साहित्य को एक सूत्र में बाँधने एवं अन्य भाषाओं की रचनाओं के माध्यम से वहाँ की जीवन–संस्कृति को समझने के लिए गोवा में अनुवाद कार्य को विशेष महत्व दिया जा रहा है। इस दिशा में गोवा कोंकणी अकादमी एवं अन्य संस्थाएँ महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। कोंकणी के व्यक्तिगत रचनाकार भी इस कार्य में सक्रिय हैं। मलयाळम उपन्यासकार के.पी. रामुण्णी के मलयालम उपन्यास का अनुवाद गोकुळदास प्रभु ने *सूफीन सांगिल्ली काणी* नामक शीर्षक से किया है। हिंदी की जानी मानी उपन्यासकार कृष्णा सोबती के उपन्यास का अनुवाद पुष्पा पई ने *बाय गो* (ऐ लड़की) शीर्षक से किया है।

कहानी

कोंकणी कथा साहित्य के अंतर्गत उपन्यास के अलावा कई कहानी–संग्रह भी प्रकाशित हुए, जिनमें प्रमुख रूप से कोंकणी कथाकार महाबळेश्वर सैल का *निमाणो अश्वत्थामा* (आखिरी अश्वत्थामा) कहानी–संग्रह आया। प्रस्तुत संग्रह शीर्षक कहानी के अतिरिक्त *मनीसबुडी* (डूबता हुआ मानव), *मलब पिशें* (आकाशीय पागल), भूंयसुवात (भूस्थान), *सैमपुरुष* (प्रकृति पुरुष), *किडे* (क्रीडा), *एक सावळेचें मरण* (छाया का मरण), *काळखापलतडीं* (अंधेरे के उस पार), *गुणसूत्रां* (गुणसूत्र), *आनीक एक हिमयुग* (और एक हिमयुग) कुल बारह कहानियाँ संग्रहीत हैं।

कथाकार नयना आडारकार बहुमुखी प्रतिभा से युक्त रचनाकार हैं। इनको कई कविता संग्रह, बालसाहित्य और ललित निबंध की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। नयना को कई स्थानीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष आपका *स्पंदन* नामक कहानी–संग्रह प्रकाशित हुआ। इसके अंतर्गत *अशेंय घडटा* (ऐसा ही होता है), *म्हजें घर* (मेरा घर), *मजबूर, अनुत्तरित प्रश्न, हैपी बर्थ डे, मर्सी किलींग, येस सर, तुजे फाटल्यान* (आपके बाद), *न्यूनगंड, ऑक्टोपास* आदि कुल सत्रह कहानियाँ संकलित हैं जोकि जीवन के विभिन्न प्रसंगों और घटनाओं पर आधारित हैं।

माया अनिल खरंगटे कोंकणी की एक सुप्रसिद्ध कथा लेखिका हैं। 'घोंटेर', 'मळबझेप' के बाद इस वर्ष इनका *मृगजल* नामक तीसरा कहानी–संग्रह प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत कहानी–संग्रह में माया ने स्त्री–पुरुष प्रेम संबंधों, व्यष्टि–समष्टि से जुड़े प्रश्नों, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से जुड़े विषयों आदि को अपनी कहानी का विषय बनाया है। *मोनी बावली* (गूंगी गुडिया), *काळया पिड्डुकांचें वर्जे* (मंगलसूत्र का बोझ), *जोगम्मा, पिसाय* (पागल), *बायेचें लग्न* (लड़की की शादी), *कांट्यांतली वट* (कंटीली राह), *उद्धाराश्रम* (सेवाश्रम), *पन्नाशी, म्हजी मोगाची धूव ती* (मेरी लाडली बेटी), *मन वळटा वळना* (मन समझता है नहीं), *दुदावेली साय* (दूध की मलाई) आदि शीर्षक से कुल सोलह कहानियाँ संग्रहीत हैं।

कोंकणी और मराठी साहित्य सर्जन में निरत सुजाता सिंगबाळ के *स्वीकार* कहानी–संग्रह का प्रकाशन 2009 में हुआ। लेखिका ने स्वयं के अंतर्मन में उठने वाले विचारों को लेकर *डायरी मनाची* कहानी की रचना की है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत संग्रह में *मनपरी, आंकवार, सवायशीण, एक खीण, रजनी, तिचें पत्र, ते दीस* नामक शीर्षक से कुल बाईस कहानियाँ संकलित हैं। सुधा खरंगटे बाल मनोविज्ञान एवं उनकी भाव कल्पना की अच्छी परख रखती हैं। बाल साहित्य से संबंधित उनका बच्चों का कहानी–संग्रह *काणी एका सुण्याची* इस वर्ष प्रकाशित हुआ।

नाटक

गोवा में कोंकणी, मराठी नाटक–रंगमंच और तियात्र की अपनी प्राचीन परंपरा है। यहाँ नाटक लिखने और मंचित करने का लोगों को बहुत

शौक है। मीडिया के प्रभाव के कारण यहाँ नाटक के प्रति लोगों की रुचि कम नहीं हुई है। युवा कोंकणी रचनाकार राज पवार अध्यापन के साथ–साथ लेखक की भूमिका का भी बखूबी निर्वाह कर रहे हैं। विगत कई वर्षों से कोंकणी की किसी न किसी विधा पर इनकी रचना प्रकाशित होती ही रहती है। इस वर्ष प्रकाशित *जमलें रे जमलें* नाटक एक निजी बस चालक के जीवन पर आधारित है जोकि किसी विशेष परिस्थितिवश डॉक्टर बन जाता है। लेखक ने इसके माध्यम से मानवीय मूल्यों की बात की है और साथ ही उसके बिखराव पर पीड़ा भी व्यक्त की है। इस नाटक की लोकप्रियता इस बात से सिद्ध होती है कि अभी तक गोवा और गोवा के बाहर इनके लगभग दो सौ मंचन हो चुके हैं।

दूसरे युवा कोंकणी नाटककार हनुमंत चोपडेकार मूलतः नाटक एवं एकांकी लेखन की दिशा में सक्रिय हैं। 'दम दमा दम', 'इन्वेस्टीगेशन', 'इना मिना डिका', 'वन टू का फोर' के बाद इस वर्ष *हरी आमचो* दो अंकों का इनका पाँचवा नाटक है। हनुमंत के नाटक मूलतः हास्य–व्यंग्य प्रधान हैं।

महेश चंद्रकांत नाईक के *ओन्ली फॉर यू* और *आमीं ना कमीं* नाम से इस वर्ष दो नाटक प्रकाशित हुए। इन्होंने कुल दस नाटकों की रचना की है। *आमीं ना कमीं* नाटक गाँव की पाठशाला की शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है। सम्राट बोरकार के एक कथासंग्रह के साथ लगभग 15 नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। इस वर्ष इनका दो अंकों का विनोदी नाटक *माल अपना फुलय सपना* प्रकाशित हुआ।

अंजली आमोणकर का अधिकांश लेखन मराठी में हुआ है, लेकिन ये कोंकणी साहित्य में भी समान रुचि रखती हैं। इन्होंने *ताडी–मिडी–शिवडी* नाम से कोंकणी बाल एकांकी की रचना की है जिसमें कुल चार अंक हैं। रत्नमाला दिवकार ने *गिरमीट* नाम से एकांकी का प्रकाशन किया है। इसमें शीर्षक एकांकी को लेकर अन्य *खरेंच आमी दुश्ट काय?, वागाची केली ताडी मिडी शिवडी,* और *बसस्टॉप* नाम से कुल चार एकांकी हैं। राजश्री बांदोडकार कारापुरकार मूलतः भौतिकशास्त्र की शिक्षिका हैं। इनकी *मळबा कडेन संवाद* (बादलों से संवाद) नामक रचना प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त प्रेम कुमार, मिनिनो मारियो रावजो एवं बेन इवानजिलिस्टो

के क्रमशः *FULAM ANI KANATTE, JOVAN AND SOIMBACHO KHELL AND CHONDRIM* नामक तियात्र रोमन लिपि में प्रकाशित हुए।

निबंध

कोंकणी साहित्य के बहुमुखी रचनाकार एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित पुंडलीक नायक मूलतः नाटककार और कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। 1986 से देवनागरी लिपि में प्रकाशित 'एकमेव' दैनिक 'सुनापरांत' के लिए पुंडलीक नायक ने ललित निबंध लिखना शुरू किया। कालांतर में उन्होंने कतिपय और निबंधों को जोड़कर तीस ललित निबंधों का संग्रह कर *पाजण* नाम से पुस्तक का प्रकाशन किया। इसमें नायक ने समसामयिक जीवन के अनुभवों को बड़े ही कलात्मक ढंग से व्यक्त किया है।

कोंकणी साहित्य के लेखन और प्रकाशन में कोंकण टायम्स पत्रिका के संपादक तुकाराम रामा शेट का महत्वपूर्ण स्थान है। इस वर्ष आपका *मनमोतयां* नाम से ललित निबंध–संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें कुल बाईस निबंध संकलित हैं। इन्होंने अपने निबंधों में रोजमर्रा के जीवन के मनोगत भावों और अनुभवों को बड़े ही लालित्यपूर्ण ढंग से अभिव्यक्ति दी है। दूसरे विनोदी नाटककार राजय पवार नाटककार के साथ–साथ अच्छे निबंधकार भी हैं इनकी विनोदप्रियता इनके नाटकों में भी दिखाई देती है। पवार का बासठ निबंधों का संग्रह *गिरमीट* इस वर्ष आया जिसमें मूलतः राजनेताओं, भाषा, फैशन, रोजमर्रा के जीवन के अनुभवों आदि को विनोदपूर्ण शैली में व्यक्त किया गया है। इसमें व्यंग्य के साथ–साथ हास्य की फुहार भी है। यज्ञेश्वर निगळे का 25 निबंधों का *अदभूत गजाळी, कितलें खरें, कितलें फट* नाम से निबंध–संग्रह प्रकाशित हुआ।

विविध विधाएँ

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त कोंकणी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान रवींद्र केळेकार ने सोवियत रूस के महान उपन्यासकार एवं विचारक तॉलस्तॉय के जीवन एवं विचार को कोंकणी में *तॉलस्तॉय* नाम से प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त प्रो. ओलिन्यू गोमिश की यात्रा साहित्य पर आधारित *EKA GOENKARACHI BHAILI BHONVDDI* नामक पुस्तक आई, जिसमें

उन्होंने फ्रांस, इटली, पुर्तगाल और स्पेन की यात्रा का वर्णन किया है। जॉन गोम्स की *Pai Tiatrist Joao Agostinho Fernandes* एवं काशिनाथ अ. नायक की *संस्कृतीचे महापुरुष* पंडित महादेव शास्त्री जोशी के विषय में परिचयात्मक पुस्तक प्रकाशित हुई। प्रा. सॅ. मा. बॉर्जिस ने *कोंकणी आवय इंग्लीश टीचर–1* नामक पुस्तक का प्रकाशन किया।

गोवा में विगत कई वर्षों से युवा कोंकणी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। पिछले वर्ष गोवा कोंकणी अकादमी ने फादर अग्नेल महाविद्यालय, पिलार के सहयोग से 16–17 फरवरी 2008 को उक्त सम्मेलन का आयोजन किया था। इस अवसर पर कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर आलेख प्रस्तुत किए जाते हैं। गोवा कोंकणी अकादमी ने उन आलेखों को संकलित कर *युवांकूर–2009* नाम से एक लघु पुस्तिका प्रकाशित की है।

पत्र-पत्रिकाएँ

कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुस्तकों के प्रकाशन के साथ–साथ यहाँ पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है। अभी भी यहाँ अंग्रेजी और मराठी भाषा का प्रभुत्व बना हुआ है। इसके पीछे ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारण हैं। गोवा से एकमात्र दैनिक *सुनापरांत* निकलता है। कोंकणी पत्रिकाओं में मासिक *जाग* विगत 36 वर्षों से निकल रहा है। विगत कई वर्षों से प्रा. माधवी सरदेसाय के कुशल संपादन में *जाग* कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं को समृद्ध कर रहा है। मार्च 2009 डॉ. राममनोहर लोहिया के जीवन एवं व्यक्तित्व पर आधारित था। *जाग* प्रत्येक वर्ष दीवाली–विशेषांक निकालता है। इसके अतिरिक्त *बिंब, ऋतु, कोंकण टायम्स, गुलाब, जैत, शोध, उर्बा, बारदेश, चवथ* आदि कई नियमित एवं अनियमित पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

वर्ष 2009 का साहित्य अकादमी पुरस्कार श्री जेम्स फर्नांडिस को *किरवंट* (करधनी) नामक पुस्तक पर तथा कला अकादमी का 'गोमंत शारदा पुरस्कार' श्री पुडंलीक नारायण नायक को उनके 'समग्र कोंकणी साहित्य लेखन' की उपलब्धि पर प्रदान किया गया है

गोवा कोंकणी अकादमी, कोंकणी भाषा मंडल, गोवा कला अकादमी,

आई.एम.बी. तोमास स्टिवन्स कोंकणी केंद्र, कला एवं संस्कृति विभाग, गोवा सरकार, कोंकणी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय आदि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएं कोंकणी भाषा और साहित्य के संवर्धन में सराहनीय कार्य कर रही हैं। इन संस्थाओं में गोवा कोंकणी अकादमी एवं कला एवं संस्कृति विभाग तथा गोवा सरकार की विभिन्न आर्थिक सहयोग की योजनाओं के कारण कोंकणी साहित्य समृद्ध हो रहा है, जैसे कि पुस्तक प्रकाशन, पुस्तक खरीदी, कोश निर्माण, शोधकार्य, अनुवाद कार्य, सम्मेलन, व्याख्यान माला, संगोष्ठी, नाट्योत्सव आदि।

***